International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-03-2020; Accepted: 21-04-2020; published: 28-04-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 58-62

मुक्तिबोध: संघर्षों का ब्लैकहोल (विशेष सन्दर्भ—'अँधेरे में')

प्रभात कुमार
पूर्व-छात्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
अँधेरे में कविता आज केवल वर्ग-संघर्ष का ही नहीं आज व्यक्ति का व्यक्ति के बीच आत्मसंघर्ष की दास्ताँ है,अन्तःस्तल का पूरा व्लाव है,दिल में उठ रहे विलोम सत्ता के खिलाफ आग है. 'मै' और 'वह' के बीच घोर तनाव है और यह तनाव 'सपनो के भारत न बन पाने' की कसक के कारण उपजता है.सपने में ही गाँधी के कन्धों पर शिशु अर्थात भारत को टिकाया जाता है.और इस तरह से 'अँधेरे में' स्वप्न शैली का अन्तःप्रवाह होता है और कव्नायक सपने में ही क्रांति करता है,इस क्रांति में उसका साथबड़े,बूढ़े,बच्चे,सभी,देते हैं.इस तरह इस लम्बी कविता में विप्लव,दर्शन,शिराओं में रिस रहे ज्ञान का मुकम्मल गान है.

मुख्य शब्द: रहस्य, ब्रह्माण्ड, आत्मलोचन, आत्मसमीक्षा, विलोम सत्ता, क्रन्तिचेतना, विचारधारा, समरसतावादी, मध्यवर्ग, नाभिनालबद्ध, फंतासी, पूँजीवाद, अस्तित्त्व, परम अभिव्यक्ति, आत्मसंघर्ष, अमूर्त्त, निम्नवर्ग, बिम्ब आदि

प्रस्तावना

कहा तो यह जाता है कि मुक्तिबोध को समझना आसान नहीं है भला आसान हो भी कैसे?उनकी काव्य या काव्य भाषा से क्या अभिप्रेत है यह समझना कठिन है ,समय काल के सापेक्ष मुक्तिबोध,मुक्तिबोध न होकर दुर्बोध हो जाते हैं।काव्य की भाषा,काव्य-संरचना,काव्य की विधि,प्रसंग,संदर्भ एकदम टटकेपन लिये हुये है।
उदाहरण के लिए-

"पैरों से महसूस करता हूँ धरत का फैलाव,
हाथों से महसूस करता हूँ दिशाएँ,
सांसों से अनुभव करता हूँ दुनिया,
मस्तक अनुभव करता है आकाश,
दिल में तड़पता है अँधेरे का अंदाज,
आँखे ये तथ्य को सूंघती-सी लगतीं
केवल शक्ति है स्पर्श की गहरी.[1]

यह वक्तव्य कवि की निज की है उनके मन मस्तक की तनाव की भाषा है क्योंकि व्यक्ति तनाव में प्यार -मोहब्बत की बात नहीं करता।यह तनाव उसे समाजिक,परिवारिक,राजनैतिक खिन्नता की वजह से मिलता है।समाज,सरकार अपने दायित्व निर्वहन में जब विफल होता है तब कवि का असली रूप सामने आता है व रचनाकार की क्रांतिकारी कलम जब चलती है तब क्रांति लाकर ही दम लेती है।ऐसे कई उदाहरण हमें इतिहास के पन्नों में मिल जाते हैं मसलन आततायी घनानन्द के तख्त को पलटना हो या कलाकार की निरुद्देश्यता से अप्रसन्न हो उसे देश-निकाला की वकालत करना हो क्रमशः हमारे सामने कौटिल्य और प्लेटो के नाम सामने आते हैं।दोनों रचनाकार के सामने "राष्ट्र की उन्नति कैसे हो"जैसे समीचीन प्रश्न थे।मुक्तिबोध के सामने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महान भारत की संकल्पना क्षण भर में मटियामेट हो गई थी क्योंकि जिस भारत की आज़ादी के लिये ग़रीब,किसान,कारीगर,शिल्पकार,पारिवारिक कार्यकर्ता आदि अंग्रजों के खिलाफ क्रांति में भाग लिए थे,आंदोलनों में लाठियाँ खाई थीं उनके सपनों का भारत तो उन्हें कभी मिला ही नहीं था।एक घुन लगा ऐसा भारत मिला जो पूँजीवादी जोंक से नाभिनालबद्ध था,जमींदारी अजगरी से जकड़ा हुआ था।जाति, धर्म से रक्तास्नात था।यही कारण था मुक्ति बोध के तनाव का और यही तनाव भविष्यवक्ता के तौर पर मुक्तिबोध को लब्धप्रतिष्ठ किया।आज भी मुक्तिबोध की पूँजीवाद पर लिखी कविता कालजयी साबित हो रही है,उदारण के लिए-वर्तमान समाज चल नहीं सकता पूंजीवादी हृदय बदल नहीं सकता।[2]
पूंजीवाद आज वर्तमान भारत की महान संकल्पना है।पूँजी प्राप्ति के तमाम उपाय सरकार से लेकर उद्योग जगत कर रहा है।
विनिवेशीकरण की आँधी में कई सरकारी उपक्रम उड़ गए और कितनों को हवाहवाई करने की बात चल रही है।ट्रेन की पटरी पर प्राइवेट तेजस का चलना इसका समसामयिक उदाहरण है।देश आज साम्प्रदायिक -तनाव से जूझ रहा है।धार्मिक लामबंदियाँ औने-पौने बात पर ही हो जातीहैं।सीएए(नागरिकतासंशोधन विधेयक)एन पी आर (राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर)एन आर सी आदि आदमी से आदमी के बीच विरोध न होकर अब धर्म का धर्म से धर्म के लिए विरोध हो गया है।बस यही कारण है कि कहीं आग लग जाती है कहीं गोली चल जाती है,यहाँ इस संदर्भ में मुक्तिबोध अपने समय के आगे चलते दिखाई देते हैं-

"**कहीं आग लग गई कहीं गोली चल गई।**"

मुक्तिबोध का तनाव 'अंधेरे में' स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अंधेरे में कविता का प्रारंभ जिज्ञासा से होता है और अंत भी जिज्ञासा से ही।प्रारंभिक जिज्ञासा का कारण संशय है तो अंतिम जिज्ञासा का कारण विश्वास। संशय अंधकार की पृष्ठभूमि में है और विश्वास उजाले की पृष्ठभूमि में। मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में ब्रह्मांड के रहस्य ऐसा जान पड़ता है जहां असंख्य जुगनुओं का अवतरण'अंधेरे में'होता है परंतु अंधेरा छटता नहीं कुछ ज्योति ढिबरी की भांति टिमटिमाती रहती है। इस अंधेरे में रहस्यों का आहट तो होता है परंतु वह दिखाई नहीं देता सुनाई अवश्य देता है।

"गहन रहस्य में अंधकार-ध्वनि-सा
अस्तित्त्व जनाता
अनिवार कोई एक
और मेरे हृदय की धक-धक
पूछती है-वह कौन
सुनाई जो देता पर नहीं देता दिखाई![3]

सवाल गंभीर है जवाब उससे भी अति गंभीर मुक्तिबोध अंधेरे में है या मुक्तिबोध का कवि अंधेरे में है लगता है कि दोनों ही अंधेरे में है। इस अंधकार का वह रहस्यमई कारण क्या है?इस रहस्यमई कारण की पड़ताल स्वयं मुक्तिबोध का कवि करता है। पड़ताल क्या है? युग की जरूरतों के हिसाब से उसमें समाई कवि की अभिव्यक्ति आत्मलोचन आत्मसमीक्षा शामिल है.मुक्तिबोध की चिंता है कुछ कर गुजरने की चिंता है एक क्रांति चेतना की शुरुआत करने की इसलिए वह स्वयं से सवाल करता है।

...ओ मेरे आदर्शवादी मन
और मेरे सिद्धांतवादी मन
अब तक क्या किया ?
जीवन क्या जिया!! [4]

इन पंक्तियों में पूछे गए सवालों का वैशिष्ट्य इस बात में है कि इन सवालों में जवाब खुद ब खुद मुखर होने लगता है अर्थात यह सवाल से ज्यादा अपने आप में जवाब है अब तक क्या किया में ही जवाब निहाँ है-[5]
(नया ज्ञानोदय जुलाई अंक पर संख्या 49 लेख गोविंद प्रसाद।) यहां गौर करने योग्य बात यह है कि इन पंक्तियों से जीवन की निरर्थकता का भी बोध कराया जा रहा है। दूसरी तरफ कवि का सवाल खुद से है साथ ही तात्कालिक समाज से भी है कि अब तक क्या किया? इस क्रांति चेतना में तत्काल सब की मुक्ति का आशय नहीं है बल्कि निम्न वर्ग एवं मध्य वर्ग की मुक्ति का आशय है इसलिए उनके दमन शोषण एवं दयनीय हालत के इतिहास के साथ-साथ मुक्ति के अभिप्राय लेकर विभिन्न रूपों में काव्य-नायक के समक्ष प्रकट होती रहती है।कारण यह कि विचारधारा या चेतना अमूर्त होती है।वह जब भी मूर्त होगी तो किसी न किसी रूपाधार के जरिए और वह रूपाधार बिंब है।इस बिंब में एक आकृति है जो फूले हुए पलस्तर के गिरने,रेत एवं पपरियों के खिसकने से बनी है। जिसमें नुकीली नाक और भव्य ललाट है। ध्यान दीजियेगा'फूला पलस्तर','रेत','पपड़ियाँ' में फिलोसोफिकल पुट है। दृढ़ हनु;

कोई अनजानी अन-पहचानी आकृति
कौन वह दिखाई जो देता,पर
नहीं जाना जाता है
कौन मनु?[6]

डॉ रामविलास शर्मा इस मनु को कामायनी के मनु से जोड़ते हैं पर यह मनु समरसता-वादी मनु नहीं दिखता।'अंधेरे में'का मनु पीड़ित प्रताड़ित जन-जीवन का मानसिक प्रतीक है। दमन एवं शोषण के कारण वह छिन्न-भिन्न हो चुका है। मासूम देह के बलात्कार का प्रतिरोध नहीं है बस एक तरह की चुप्पी है।मन मे ज्वाला सी धधकती बेचैनी है-- और यह चुप्पी सिर्फ कवि की ही नहीं वरन, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की भी है।क्योंकि मामला संगीन है व मामलात सवालों के घेरे में। समसामयिक निर्भया प्रसंग और न जाने कितनी मासूम निर्भया की कहानी इन्हीं कटधरों में रोज़ खड़ी की जा रही है...हर रोज अखबारों की टुकड़ियां, मीडिया के कैमरे उसकी आबरू को ताड़-ताड़ करता है...

खूबसूरत कमरों में कई बार,
हमारी आंखों के सामने,
हमारे विद्रोह के बावजूद,
बलात्कार किए गए
नक्षीदार कक्षों में।
भोले निर्व्याज नयन हिरनी-से
मासूम चेहरे
निर्दोष तन-बदन
दैत्यों की बाहों के शिकंजे में
इतने अधिक
इतने अधिक जकड़े गए
कि जकड़े ही जाने के
सिकुड़ते हुए घेरे में वे तन-मन
दबते पिघलते हुए एक भाप बन गए

----एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन,मुक्तिबोध.

इसलिए कभी वह बंद कमरे के अदृश्य अस्तित्व की तरह कभी पहाड़ी-पार के तालाब के तम-श्याम-जल में कुहरीली श्वेत आकृति की तरह और कभी लाल कोहरे से ढके रक्तालोकस्नात पुरुष के रूप में दिखता है। काव्य नायक 'मैं'मध्यवर्गीय कमजोरियों से ग्रस्त है जबकि रहस्य पुरुष 'वह'उपेक्षित जीवन आदर्शों के प्रति उसे सजग करता है।

'मैं' स्वीकार-अस्वीकार के बीच निर्णयहीनता की स्थिति में है। मैं आगे बढ़कर 'वह'को अपनाना चाहता है। पूरी कविता फेंटेसी के शिल्प में गुंथी हुई है मुक्तिबोध फेंटेसी शिल्प के माध्यम से पूरी तरह क्रांति-चेतना को धार देना चाहते हैं इस फेंटेसी के माध्यम से काव्यनायक की असाधारण मनःस्थिति को संप्रेष्य बनाना संभव हो सकता था क्योंकि फेंटेसी देश काल की चिंताओं से मुक्त करती है और यह हर एक देश हर एक काल में विचरण कर सकती है।इसके अंतर्गत कालातीत स्मृति और भविष्य का समन्वय वृहत्त मनोविज्ञान के स्तर पर होता है।चेतना में काल से परे होने पर काव्य संरचना की स्थापत्य अलग ही दिखाई पड़ती है।फेंटेसी के माध्यम से ही तो गाँधी के कंधे पर एक शिशु टिकाया जाता है अर्थात एक उत्तरदायित्व दिया जाता है और फिर यह शिशु-रूपांतरण की प्रक्रिया द्वारा सूरजमुखी फूल के गुच्छों फिर राइफल में बदलकर सशस्त्र विद्रोह करने के प्रति प्रतिबद्ध हो जाता है।कुछ ऐसी ही प्रतिबद्धता नागार्जुन के यहां दिखाई देती है परंतु वह सशस्त्र नहीं है लेकिन भाव विद्रोह का ही है।

प्रतिबद्ध हूं
संबंध हूं
आबद्ध हूं[7]

नागार्जुन प्रतिनिधि कविता पृष्ठ संख्या 15 राजकमल पेपर बैग।
इस तरह से 'मैं' यहां आकर सामूहिक दमित जन-चेतना के प्रति प्रतिबद्ध हो जाता है। लाख भुलावे,प्रताड़ना एवं क्रॉस एग्जामिनेशन के बावजूद वह उस जनक्रांति चेतना को त्यागता नहीं है और जिसने मौजूदा व्यवस्था के घातक चरित्र को समझने और उससे मुक्त होने की समझ दी है। घातक इस सन्दर्भ में भी की इसी सड़ी व्यवस्था ने मुक्तिबोध द्वारा लिखित पुस्तक "भारत:इतिहास और संस्कृति"को सांप्रदायिक बताकर साम्प्रदायिक दलों को उकसा कर उसे प्रतिबंधित करवा दिया था।[8] प्रकाशकों और और तथाकथित धर्म,आडम्बर,कला के चोले पहनकर लिखने वालों ने मुक्तिबोध का साथ छोड़ दिया और फिर मुक्तिबोध की पीड़ा कुछ इस तरह उभर कर आती है।

सब चुप,साहित्यिक चुप और कविजन निर्वाक
चिंतक,शिल्पकार,नर्तक चुप हैं;
उनके खयाल से यह सब गप है[9]

इसीलिए मुक्तिबोध मठ और गढ़ तोड़ने की बात करते हैं। यह मठ और गढ़ से सीधा तात्पर्य शोषणकारी पूँजीपति प्रकाशक और धर्म के ठेकेदारों से है इसीलिए व्यक्ति स्वातंत्र्य का आकर्षक छलावा उन्हें अब भ्रमित नहीं करता।

पूंजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता स्वतंत्र व्यक्ति का वादी
छल नहीं सकता मुक्ति के मन को

जन को[10]

अंतिम स्वप्न दृश्यों में दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ जनशक्ति का हिंसक संघर्ष है जो दुः स्वप्नों के कठिन दौर से गुजरने के बाद यह सुखद स्वप्न आया है कि कहीं आग लग गई कहीं गोली चल गई।इसके द्वारा एक स्थिति ऐसी आती है कि सभी पीढ़ी के लोग सभी प्रकार के उपलब्ध अस्त्रों के साथ वर्ग संघर्ष में शामिल हो जाते हैं।

"दादा का सोंटा भी करता है दांव पेच
गगन में नाच रही कक्का की लाठी
यहां तक कि बच्चे की पेंपे भी उड़ती।"

पूंजीवादी व्यवस्था से ताल्लुक रखने वाले बुद्धिजीवी वर्ग को यह क्रांति भले ही किंवदंती लगे परंतु यह क्रांति बुद्धिजीवियों का मोहताज नहीं है। क्रांति जारी है...इसी बीच स्वप्न टूट जाता है और वह फिर अकेला हो जाता है। देखा जाए तो 'अंधेरे में' कविता एक लंबी कविता है जिसमें आत्मलोचन है,आत्मसमीक्षा है,मानसिक द्वंद्व है।शोषित और शोषणकारी सत्ताओं के बीच द्वंद्व है। मुक्तिबोध डीक्लास अर्थात क्लासलेस सोसाइटी की संकल्पना करते हैं।इस क्लासलेस सोसाइटी की संकल्पना वे मार्क्स से प्रभावित होकर करते हैं परंतु मुक्तिबोध यह भूल जाते हैं कि भारतवर्ष की समस्या का समाधान डीक्लास होने से नहीं वरन जातिविहीन समाज की संकल्पना से होता। बहरहाल महात्मा गांधी और बाल गंगाधर तिलक ने भी इस देश के लिए क्लासलेस सोसाइटी की कल्पना किये थे।गांधी जी डीक्लास हो गए थे मुक्तिबोध की भी संकल्पना डीक्लास होने की है और इसी भावावेश में इनका गुस्सा सवाल में बदल जाता है कि मेरा हिंदुस्तान नंगा क्यों है?इसीलिए श्रीकांत वर्मा ने कहा कि इसमें(अंधेरे में)पूरा हिंदुस्तान है क्योंकि 'अंधेरे में' का नायक ही मुख्य शिकार है और यही नायक पूरा हिंदुस्तान है। डिक्लास होने की बात मुक्तिबोध की निम्न पंक्तियों से भी साबित होता है...

मैं तुम लोगों से दूर हूं
तुम्हारी प्रेरणाओं से मेरी प्रेरणा भिन्न है
जो तुम्हारे लिए विष है वो मेरे लिए अन्न है[11]

यहां दिखाई देता है आत्मलोचन,ईमानदारी का आईना।आत्मालोचन का यह श्वर मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' ईमानदारी का साक्षरता है।

मुक्तिबोध का कवि अपने गिरेबान में झांकने का सामर्थ्य रखता है14(पेज नंबर 46)।इस तरह से अपने अस्तित्व को खोजना और उस खोज के परिणाम की दुविधा या सस्पेंस ही 'अंधेरे में' कविता को नाटकीयता प्रदान करती है। यह काव्य शैली का चमत्कार नहीं बल्कि कथ्य की गहरी अर्थवत्ता का सूचक है कथन शैली की दृष्टि से यह स्वप्न कथा है और स्वप्न शैली के कारण कथा चित्रात्मक हो गई है तथा आवश्यकतानुसार देश और काल की दृष्टि से नितांत असम्बद्ध तथा दूर की वस्तुओं को भी एकत्र कर अपने पास समेटकर रखा जा सकता है एवं असंभव होने वाली घटना भी स्वप्न में दिखाई जा सकती है।'अंधेरे में' कविता की विशेषता है कि उसका प्रवाह एक सा नहीं है जिस तरह पहाड़ों,झीलों से निकलने वाली नदियाँ गहरी खाइयाँ,मैदानों से होकर डेल्टा बनाती हुई मुहानों से मिलने से पहले विविधतामयी प्रवाह को प्राप्त करती हैं उसी तरह की ही विविधता व जटिलता है 'अंधेरे में'। मुक्तिबोध की एक खासियत रही है कि वे फैंटसी के माध्यम से सामाजिक परिदृश्य और राजनीतिक दुनिया का चित्र उकेरते हैं,उसे महसूस करते हैं और अंदर ही अंदर उसे झेलते हैं यह झेलना ही तो उन्हें तनाव में ले जाता है,लेकिन यह तनाव स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दो वर्ग समाज के विभेद से पैदा होता है और 'अंधेरे में' उसकी आहट सुनाई देती है।स्वतंत्रता पूर्व शायद इसी तरह का अँधेरा भारतेंदु के 'अंधेर नगरी' और निराला की 'राम की शक्ति पूजा' में दिखाई देती है।

"है अमानिशा,उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार"[12]

परंतु दोनों के यहां परिवेशगत परिस्थितियां अलग-अलग थीं।क्रांति का बिगुल दोनों के यहां विलोम सत्ता के खिलाफ है। मुक्तिबोध के यहां भी यही प्रतिबिंबित होती है। कवि और आलोचक गोबिंद प्रसाद के अनुसार 'अंधेरे में' मुक्तिबोध का काव्य संसार बहुत दूर तक परस्पर प्रतिलोम सत्ता के धागों से बुना काव्य संसार है। इसीलिए मुक्तिबोध के यहाँ अभिव्यक्ति की खोज है.परम अभिव्यक्ति की खोज के कारण इनके यहां मौन नहीं है जबकि अज्ञेय महामौन के कवि हैं।

"मौन भी अभिव्यंजना है
जितना तुम्हारा सच है"
उतना ही कहो।"

मुक्तिबोध की काव्य भाषा का एक रंग भय तत्व के आधारभूत चरित्र योग से बुना गया है। काव्य भाषा का रंग हृदय में 'रिस रहे ज्ञान का तनाव'के रंग की भाषा है।शायद इसीलिए नामवर सिंह के अनुसार " 'अंधेरे में' कविता परम अभिव्यक्ति की खोज है" अंधेरे में कविता को समझने के लिए कविता के गूढ़ रहस्यों को समझने के लिए हमें थोड़ा पीछे लौटना होगा अर्थात पचास के दशक के आसपास।पचास के दशक के दरम्यान भारत के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में होने वाला नकारात्मक परिवर्तन मुक्तिबोध की चिंता का कारण था और आज भी यही नकारात्मक परिवर्तन चिंता का कारण है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जो सपने बुने गए थे वह खंडित हो रहा था समाज पूंजी पतियों के गिरफ्त में आ चुका था और फिर मुक्तिबोध की अन्तःस्तल की पीड़ा गोचर होती है। आज जब भी वर्ग-संघर्ष,धर्म-संघर्ष, जाति-संघर्ष की पीड़ा से आम आदमी रूबरू होता है तो अपने आप में मुक्तिबोध की आत्मा को ब्रह्मराक्षस की तरह भटकता पाता है।और फिर कविता आम आदमी की पीड़ा, शोषण,दमन का एक दहकता दस्तावेज दिखाई पड़ता है।शमशेर बहादुर सिंह के शब्दों में 'अंधेरे में' कविता देश के आधुनिक जन इतिहास का स्वतंत्रतापूर्व और पश्चात का दहकता दस्तावेज है।" पृष्ठ संख्या 109 अंतर स्थल सात खंडों में विभाजित इस कविता में नाटकीयता किया है,नाटकीयता का कारण उसकी आत्मगत भाव मनोदशा और परिवेश है।इसके कारण कविता में आत्म-संघर्ष कभी खत्म नहीं होता शायद इसीलिए कविता का मुकम्मल अंत नहीं होता। स्वयं मुक्तिबोध इस बात को स्वीकार करते है और कहते हैं "शब्दों में अभिव्यक्ति का विषय बनकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है वह भी ऐसा गतिशील है और उसके तत्व भी परस्पर गुम्फित है यही कारण है कि मैं छोटी कविताएं लिख नहीं पाता और जो छोटी होती हैं वस्तुतः छोटी न होकर अधूरी होती हैं (मैं अपनी बात कह रहा हूं)[13].

इस प्रकार हम कह सकते हैं अंधेरे में कविता वर्ग संघर्ष का एक ऐसा गान है जो स्वप्न में संपन्न होता है एवं उससे निकलकर यथार्थ की धरातल पर नाटकीय मोड़ लेता हुआ आम इंसान के दुःख,दर्द,द्वंद्व,तनाव,पीड़ा को अभिव्यक्त करता है और यह सिर्फ 'अन्तःस्तल का पूरा विप्लव'[14]नहीं रह जाता बल्कि बाह्यस्थल को भी जोरों से झकझोरता है।

वो सरमस्तों की महफिल में गजानन मुक्तिबोध आया

सियासत ज़ाहिदों की ख़न्दए-दीवान हो जाये.

----शमशेर

सन्दर्भ सूची

1. .गजानन माधव मुक्तिबोध,प्रतिनिधि कविताएँ,राजकमल पेपरबैक्स,चौथा संस्करण,1991,पृष्ठ 132
2. वही पृष्ठ.165
3. वही पृष्ठ.127
4. वही,पृष्ठ. 141
5. गोबिंद प्रसाद,लेख:मुक्तिबोध की कविता:परिपूर्ण का

आविर्भाव,नया ज्ञानोदय,जुलाई अंक,2015,पृष्ठ 49

6. मुक्तिबोध,प्रतिनिधि कविताएँ,पृष्ठ127
7. नागार्जुन,प्रतिनिधि कविता,संपादक-नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन,पृष्ठ.15
8. नंदकिशोर नवल,**मुक्तिबोध**,साहित्य अकादमी,प्रथम संस्करण 1996,पृष्ठ, 40,41
9. मुक्तिबोध,प्रतिनिधि कविताएँ,पृष्ठ165
10. वही, पृष्ठ 165
11. वही, पृष्ठ 84
12. रामविलास शर्मा ,राग-विराग(निराला),राम की शक्ति पूजा,लोकभारती प्रकाशन,पृष्ठ.93
13. मुक्तिबोध, एक साहित्यिक की डायरी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,पृष्ठ.29,30
14. निर्मला जैन,अन्तःस्तल का पूरा विप्लव,लोकभारती प्रकाशन,पृष्ठ. 91.